International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(3): 161-164

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(3): 161-164
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-03-2023
Accepted: 18-04-2023

डॉ. आनन्द कुमार प्रियदर्शी
अतिथि शिक्षक, संस्कृत विभाग, आर.एन.आर. कॉलेज, समस्तीपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. आनन्द कुमार प्रियदर्शी
अतिथि शिक्षक, संस्कृत विभाग, आर.एन.आर. कॉलेज, समस्तीपुर, बिहार, भारत

नेपाल का संस्कृत साहित्य

डॉ. आनन्द कुमार प्रियदर्शी

प्रस्तावना

नेपाल आज की तिथि में भले ही मानचित्र पर भारत के पड़ोसी देश के रूप में दिखाई देता हो, किन्तु विशेषज्ञ इसे सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भारत से अभिन्न मानते हैं। प्रो. पाण्डेय ने इस शोध लेख में नेपाल के कतिपय संस्कृत काव्यों की रचनाशैली, रस परिपाक, अलंकार प्रयोग तथा मानवी मूल्य भारतीय संस्कृत काव्यों की तरह है इस बात को सोदाहरण प्रमाणित किया है। रामायण, महाभारत, बृहत्कथा, पुराण एवं उपनिषद् को उपजीव्य बनाकर अनेको नेपाली संस्कृत काव्यों की रचना हुई है। समय–समय पर उनका प्रकाशन भी हुआ है वहाँ के शिलालेखों में भी शिलालेखकार कवियों द्वारा रचित श्लोकों में रस और अलंकार का सहज प्रयोग देखते ही बनता है। इस लेख में प्रकृतिवर्णन तथा वात्सल्य, स्नेह, ममता, करुणा आदि भावों के परिपोषक पद्यों को उदयुत करते हुए नेपाली संस्कृत साहित्य की रचनाधर्मिता एवं विपुलता को बड़े ही सहज भाव में व्यक्त किया गया है। निबन्ध के अन्त में चौहत्तर संस्कृत काव्यों की सूची कवि–नाम और प्रकाशन वर्ष के साथ दी गई है, जो संस्कृत काव्य रसिकों एवं अनुसन्धाताओं के लिए संग्रहणीय है ।

भारत और नेपाल का साहित्यिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध हजारों वर्ष पुराना है। दोनों ही देश आर्य संस्कृति के पोषक और 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से ओतप्रोत रहे हैं। दोनों देशों के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध जितने पुराने हैं उतने ही मधुर भी विदेहराज जनक अध्यात्म विद्या के अपूर्व आचार्य और ब्रह्मज्ञानी थे। उनकी शिक्षा को भारत ने आत्मसात् किया। आज भी जनक की ब्रह्मविद्या भारतीय दर्शन की प्राण है तथा वह उपनिषद् विद्या प्रासाद के मूल स्तम्भ के रूप में समादृत है।

नेपाल केवल उपनिषद् विद्या का ही केन्द्र नहीं रहा। यहाँ बौद्ध दर्शन के भी अनेक सम्प्रदाय पुष्पित और पल्लवित हुये । रामायण, महाभारत और बृहत्कथा का अमिट प्रभाव नेपाल के साहित्य और संस्कृति में झलकता है। इन ग्रन्थों को उपजीव्य बनाकर यहाँ अनेक रचनायें हुई ।

नेपाल में रचित संस्कृत साहित्य की चर्चा का श्रीगणेश मैं वहाँ के शिलालेखों से करना चाहूँगा। यद्यपि शिलालेखों का लक्ष्य काव्यसौष्ठव प्रदर्शित करना कथमपि नहीं होता। राजा अपनी दिग्विजय यात्राओं, अपने समय की राजनैतिक घटनाओं, आर्थिक और धार्मिक स्थितियों तथा उस प्रकार के अपने अन्य कार्यों को चिरस्थायी बनाने के लिये ही शिलालेखों का निर्माण कराते हैं किन्तु काव्यरचना में निपुण राजकवियों द्वारा रचित इन शिलालेखों में काव्यत्व सहज रूप से ही सुशोभित होता है।

नेपाल के लिच्छवी वंशी राजाओं ने सन् 463 ई. से 747 ई. के मध्य यद्यपि अनेक शिलालेख उत्कीर्ण कराये किन्तु उनमें से अब कुल 89 शिलालेख प्राप्त होते हैं। इनका प्रथम प्रकाशन इटली में इतिहासवेत्ता रोने ये नोली ने ''इन्स्क्रिप्सन्स ऑफ नेपाल'' शीर्षक से रोमन लिपि में कराया था जिनका देवनागरी लिप्यन्तरण अंग्रेजी एवं हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित हो चुका है ये शिलालेख नेपाल और भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सम्बन्ध को तो प्रमाणित करते ही हैं, अपनी काव्यात्मकता ये गुप्तकालीन अभिलेख शैली का भी स्मरण कराते हैं। उदाहरणार्थ मानदेव के छंगूनारायण मानदेव प्रशस्ति स्टम्प लेख के अधोलिखित पद्य द्रष्टव्य हैं

प्रत्यागत्य सगद्गदाक्षरमिदं दीर्घं विनिःश्वस्य च
प्रेम्णा पुत्रमुवाच साश्रुवदना यातः पिता ते दिवम् ।
हा पुत्रास्तमिते तवाद्य पितरि प्राणैर्वृथा किं मम
राज्यं पुत्रक कारयाऽहमनुयाम्यद्यैव भर्तुर्गतिम्

महाराज धर्मदेव की मृत्यु के अनन्तर सती होने को उद्यत महारानी राज्यवती अपने पुत्र मानदेव के पास आती है, दीर्घ निःश्वास लेती हुई वह रानी गद्गद होकर अपने पुत्र से कहती है कि, हे पुत्र !

आज तुम्हारे पिता के दिवंगत हो जाने के अनन्तर अब मेरे जीवन का कोई प्रयोजन नहीं रहा मेरा जीवन व्यर्थ है। अब तुम राज्य करो मैं आज ही पति का अनुगमन करूँगी । वह पुनः कहती है।

किं मे भोगविधानविस्तरकृतैराशामयैर्बन्धनैः
मायास्वप्ननिभे समागमविधौ भत्रां विना जीवितुम् ।
यामीत्येवमवस्थिता खलु तदा दीनात्मना सूनुना
पादौ भक्तिवशान्निपीड्य शिरसा विज्ञापिता यत्नतः

रानी राज्यवती पुत्र के सम्मुख संसार की असारता का निरूपण करती है। आशारूपी बन्धनों में बंधे अब उसका कोई प्रयोजन नहीं रहा। पति के विना संसार के सारे भोग उसके इस विशाल भोग–विधान से लिये व्यर्थ हैं। सांसारिक आसक्ति तो मायावी स्वप्नों की तरह । उनमें पति के बिना जीवित रह पाना संभवनहीं है। इसलिये वह पति के मार्ग का अनुसरण करती हुई स्वर्ग जाने को उद्यत होती है। यह देखकर दुःखी पुत्र मानदेव माता के चरणों में गिर जाता है और शिर पटक–पटक कर कहता है

किं भोगैर्मम किं हि जीवितसुखैस्त्वद्विप्रयोगे सति
प्राणान् पूर्वमहं जहामि परतस्त्वं यास्यसीतो दिवम्।
इत्येवं मुखपङ्कजान्तरगतैर्नेत्राम्बुमिश्रैर्द्रवं
वाक्पाशैर्विहगीय पाशयशगा बद्धा ततस्तस्थुषी

माँ तुम्हारे न रह जाने के बाद इन राज्य आदि सांसारिक भोगों से मेरा क्या प्रयोजन? मैं तुमसे पहले ही प्राण त्याग दूँगा । तुम मेरे बाद स्वर्ग जाओगी। आँसुओं से भीगी पुत्र के मुख कमल से निकली वाणी के पाश में विहगी की भाँति बंधी हुई रानी खड़ी की खड़ी रह गयी ।

शिलालेखकार कवि के इन श्लोकों में करुणरस का अविरत प्रवाह सहृदय के नेत्रों को अश्रुपूरित कर देता है । पति के बिना रानी राज्यवती का संसार को सूना देखना तथा माँ को चितारूढ़ होने को उद्यत देखकर मानदेव का विह्वल होना काव्य में अपूर्व चारुता का संधान करता है। वात्सल्य, स्नेह और ममता जैसी कोमल भावनायें इस शिलालेख की विशेषतायें हैं।

नेपाल के शिलालेखों में जिस प्रकार रसपरिपाक का परिपोष हुआ है उसी प्रकार श्लेष, यमक आदि अलंकारों का स्पृहणीय विन्यास कतिपय शिलालेखों में ओजस्विता और गाडबन्धता की सृष्टि करता है। उदाहरणार्थं पशुपतिवंशप्रशस्तिशिलालेख के कतिपय पद्य देखे जा सकते हैं –

माद्यद्दन्तिसमूहदन्तमुसलक्षुण्णारिभूभृच्छिरो
गौडोदादिकलिङ्गकोशलपति श्रीहर्षदेवात्मजा ।
देवी राज्यमती कुलोचितगुणैर्युक्ता प्रभूता कुलै
नोढा भगदत्तराजकुलजा लक्ष्मीरिव क्ष्माभुजा

नेपाल से प्राप्त इन शिलालेखों का जितना महत्त्व ऐतिहासिक दृष्टि से है उतना ही महत्त्व साहित्यिक दृष्टि से भी है। नेपाल में संस्कृत साहित्य की रचना और वहाँ के कवियों की काव्यचातुरी को इन शिलालेखों के माध्यम से प्रमाणित किया जा सकता है। ऊपर 'इत्येवं मुखपङ्कजान्तरगतैर्नेत्राम्बुमित्रैर्दृढम् वाक्याशैर्विहगीव पाशवशगा बद्धा ततस्तस्थुषी' में शिलालेखकार कवि ने पुत्र के आँसुओं से भीगे वाणी– पाश से बँधी माता की विवशता का जो वर्णन किया है, वह निश्चय ही उसकी अपनी प्रतिभा का चमत्कार और उसका अपना मुहावरा भी है। भीगा हुआ पाश अधिक सुदृढ़ होता है तथा बंधन को दृढ़ रखता है।

मानदेव के काल की इस रचना से यह भी सिद्ध होता है कि संस्कृत नेपाल में उनसे पहले सहस्राब्दियों से व्यहृत होती रही होगी।

नेपाल की यह संस्कृत रचना धर्मिता कमोवेश सतत रूप से चलती रही। जिस प्रकार नेपाल का शिलालेखीय संस्कृत साहित्य गुप्तकाल के शिला लेखों की उत्कृष्टता का प्रतिविम्ब है उसी प्रकार आधुनिक काल में लिखा गया नेपालदेशीय संस्कृत साहित्य भारत में प्रगीत संस्कृत साहित्य का प्रतिविम्व उपस्थति करता है। इस कालखण्ड में नेपाल में अनेक महाकाव्यों, खण्डकाव्यों, नाटकों तथा कथा आदिका हुआ। नेपाल में इस काल खण्ड में रचित कतिपय प्रमुख काव्य का परिचय यहाँ संक्षेप में द्रष्टव्य है–

(क) महाकाव्य भारतवर्ष में स्वतन्त्रता के बाद प्रायः 350 महाकाव्यों का प्रणयन हुआ। महाकाव्यों के उपजीव्य रामायण, महाभारत, पुराण आदि अवश्य रहे किन्तु कवियों ने उस कथावस्तु को अप युग की आवश्यकता के अनुसार अनुरूपता प्रदान की रेवा प्रसाद द्विवेदी का सीताचारित, राजेन्द्र मिश्र का जानकीजीवनम् तथा इस प्रकार के अन्य महाकाव्य इसमें प्रमाण हैं।

नेपालदेशीय महाकवियों में पूर्णप्रसाद ब्राह्मण का नाम अग्रगण्य हैं। इनका जन्म गण्डकीक्षेत्र के मंडल में स्थित काफल डाँडा नामक ग्राम में 1979 विक्रमी में हुआ । इनके पिता का नाम देवीदत्त तथा मा का नाम रुक्मिणी देवी था। इनकी शिक्षा–दीक्षा काठमाण्डू स्थित रानीपोखरी संस्कृत महाविद्यालय में हुई।

पूर्णप्रसाद ब्राह्मण की काव्य रचना का प्रयोजन यश, धन प्राप्ति आदि न होकर समाज–सुधार, शोषण का उन्मूलन तथा जन–जागरण है उनका 'सत्यहरिश्चन्द्रमहाकाव्य' तेरह सर्गों में विभक्त है। इसकी र विक्रम संवत् 2003 से 2005 के मध्य हुई तथा इसका प्रकाशन 2007 विक्रमी में हुआ। कवि ने पुराणों से हरिश्चन्द्र की कथा लेकर तत्कालीन नेपाल राष्ट्र के परिवेश के अनुसार उसे हाला वंशवादी रागा सरकार क उन्होंने इस काव्य के माध्यम से विरोध किया। राजाओं द्वारा जनता के शोषण के विरुद्ध प्रयल आवाज उठायी। इस महाकाव्य में अनुष्टुप् उपजाति, मन्दाक्रान्ता आदि बारह छन्दों का प्रयोग हुआ है तथा इसमें कु 752. पद्म है।

महाकाव्य में स्वाभाविक अलंकारों का प्रयोग हुआ है। उपमा उत्प्रेक्षा, रूपक, अप्रस्तुतप्रशंस स्वभावोक्ति और अर्थान्तरन्यास कवि के प्रिय अलंकार हैं। यहाँ उपमा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

देवी कपोतीय वियोजिता प्रियात्
प्रसूनवल्लीत पृथक्कृता मधोः।
निध्यायति म्लानहदैव केवलं
तापस्य शोषस्य च पात्रतां गता।।

महारानी शैव्या कपोती की तरह अपने प्रियतम से अलग कर दी गयी। वह वसन्त से अलग की पुमित लता की भाँति सूख रही थी ताप और शोषण की पात्र वह शैव्या कुछ बोल नहीं सकती थी के दुःखी हृदय से अपने प्रियतम को सोच रही थी यहाँ उपमान के रूप में प्रयुक्त कपोती उपमेय शैव्या को व्यक्त करने में पूर्णतः समर्थ है। इसी प्रकार मधु और नली से हरिश्चन्द्र और शैय्याको उपमित करते कवि ने दोनों की दुरवस्था का मनोहारी चित्र खींचा है। उत्प्रेक्षा के प्रयोग में कवि की निपुणता अलिखित पद्म में देखी जा सकती है.

दिक्सुन्दरीभिरभिर्हसितप्रकाश
श्रीतेव चामरवधूभिरधीरवृत्त्या
क्षिप्तविलासकलहे मणिरत्नपूर्णः
व्याप्तान्तरेव रजनी मधुरं महास

कवि ने इस महाकाव्य में व्यर्थ पाण्डित्य प्रदर्शन नहीं किया। उसने नेपाल की जनता की दुर्दशा का वर्णन करते हुये तत्कालीन राजा के प्रति अपनी अनास्था को प्रकट किया है। इस महाकाव्य में करुण रस अही है। शृंगार आदि भी अंग के रूप में उपन्यस्त हैं। हरिश्चन्द्र का समग्र जीवन ही करुण रस से परिपूर्ण है. अतः कवि ने अपने महाकाव्य में करुण को ही प्रधानता प्रदान की है। काशी में विके हरिश्चन्द्र को अपने फ्रेश स्वामी के साथ जाने को उद्यत

देख कर रानी शैल्या का वर्णन करते हुये कविसहृदय पाठक को करुण प्लावित कर देता है –

वियोगकाले महिषी शुचाऽऽकुला
नृपं यियासुं नयनाम्युरुद्धया ।
ददर्श दृष्टयैव निमेषशून्यया
शशाक नो किञ्चिदपि प्रभाषितुम्

शोक से व्याकुल रानी शैव्या स्वामी के साथ जाने को उद्यत अपने प्रियतम हरिश्चन्द्र को डबडबाई आँखों से निर्निमेष देखती रही पर कुछ बोल नहीं पायी उनका शरीर प्रजा की सेवा के लिये इन्द्र सहन कर रहा था
हरिश्चन्द्र मन से लोक कल्याण के लिये उद्यत थे। उनके वचन सत्यता और पवित्रता को धारण कर रहे थे। इस प्रकार वह राजा स्वयं मूर्त विविध तप के रूप में सुशोभित हो रहा था।

व्ययं सदा लोकहिताय चि
सेवापरं द्वन्द्वसहं शरीरम् ।
सत्येन पूतं वचनं च विभ्रत्
स एव मूर्त त्रिविधं तपोऽभूत्

काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्य रचना के कतिपय सामान्य नियमों का उल्लेख किया है जिनके अनुसार महाकाव्य में प्रकृति वर्णन अत्यावश्यक है। पूर्णप्रसाद ब्राह्मण अपने महाकाव्य में प्रकृति वर्णन के लिये सर्वधा रावधान है। भगवती भागीरथी का प्रातः कालीन सौन्दर्य वर्णन कवि की प्रकृति–चित्रण पटुता का निदर्शन है–

प्रातः प्राच्या उदय कनकद्वारमुद्घाटनदेवी
सा स्वर्णचा किरणपथतो मन्दगत्यायतीर्थ।
स्नातुंगासलिलमविशत् तत् स्थितं व्याप्य तोयम्।।

स्वर्णिम आभा से मण्डित देवी उपा प्राची दिशा से सोने के द्वार खोल कर किरणों के मार्ग से म गति से उत्तरी और स्नान करने के लिये गंगा के जल में प्रविष्ट हुई। उसके सुनहले बालगंगा की लह नृत्य कर रहे थे । कवि ने अपने समय की समाजिक विकृति का वर्णन करते हुये श्मशान का भी किया है। साथ ही तत्कालीन राजनीति के प्रति अपना क्रोध प्रकट करते हुये उसने ग्रीष्म ऋतु का वर्णन है –

भूमिश्च तप्ता हरितश्च तप्ता
अन्तर्वहितत् सममेव तप्तम् ।
ग्रीष्मे जना, वर्त्मनि धर्म
निरङकुश राजनयं स्मरन्ति।।

ग्रीष्म ऋतु पर निरंकुश राजनीति का आरोप कर कवि ने अपना आक्रोश व्यक्त किया है। पूर्ण ब्राह्मण ने ग्रीष्म के बहाने शोषण के विरुद्ध भी प्रबल आवाज उठायी है–

ग्रीष्मस्य राज्यस्य विशिष्टतेव
भुक्ष्याल्पमात्र यस नग्नदेहः।
सॉलिप्य नो हि न तिष्ठ मित्र–
लनः सदा निर्विशा शोषणञ्च

यहाँ ग्रीष्म के वर्णन के व्याज से तत्कालीन राजा के शासन में प्रजा की भुखमरी, नग्नशरीरता आ वर्णन किया गया है। पूर्णप्रसाद ब्राह्मण द्वारा रचित इस महाकाव्य के नायक हरिश्चन्द्र है नायिका उनकी शैव्या है वसिष्ठ, विश्वामित्र, वरुण, रोहित आदि की भी यथोचित भूमिका इस महाकाव्य में है यत्र तत्र भाषा के अनुकरणात्मक शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। महाकाव्य का पर्यवसान विश्वामित्र द्वारा हरिश्चन्द्र गयी स्वन्त्यन्ना से होता है–

समाप्ताग्निपरीक्षा ते समाप्ता दुःखवासराः ।
श्रान्तास्माकं परीक्षेय धन्यः सत्याग्रहस्तव।।
प्राणिमात्रे स्वात्मभावस्तत् क्षात्रं सा च सत्यता ।
महात्मन् नैव पश्यामो देवेषु त्वथि चान्तरम्।।
किं वाण्यधिकं वत्स सदैतत् हृदये स्मर
तेन त्यक्तेन भुज्जीथाः भा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।

इस महाकाव्य का सन्देश, रचना शैली, अलंकार प्रयोग तथा मानवीय मूल्य भारत और नेपाल के लिये है। भरत राज घिमिरे मन्थलीय ने महेन्द्रोदय' नामक दशसर्गात्मक महाकाव्य की रचना की। इ नरेश महेन्द्र का परिचय दिया गया है। कवि ने अपने व्यक्तित्व प्रा राजासनका चतुरता का वर्णन किया है। यह महाकाव्य भारतीय आर्य द्वारा निर्धारित नि ता है। अन्त में पौराणिक परम्परा के अनुसार राजा को विष्णु का अंश भागते हुये कवि ने अपने काव्य की समाप्ति की है।
महाकवि हरिप्रसाद आचार्य द्वारा विरचित बीस सगों में विभक्त 'गोरक्षशाहवंशम' महाकाव्य का प्रकाशन 1955 ई. में हिन्दी अनुवाद के साथ होशियारपुर से हुआ। इस महाकाव्य में शाहवंशीय नेपाल नरेशों का ग है। इस महाकाव्य में रघुवंश महाकाव्य तथा कल्हण की राजतरंगिणी का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। कवि को अपने देश पर गर्व है वह नेपाल का चित्र खींचता हुआ लिखता है –

सर्वतन्वस्वतन्त्र यो नानागिरिविभूषितः ।
अरण्यानीसमायुक्तो निरध्वनिनादितः
सोऽयं नेपालदेशा नो वेदाचारविचारकः ।
निधानं सर्वधर्माणां जयत्यस्मिन् महीतले ।

श्रीकृष्णप्रसाद घिमिरे ने पाँच महाकाव्यों की रचना की. श्रीकृष्णचरितामृतम् 2. वृत्रवधम् 3. वपतिचरितम् 4. गौरीगिरिशम् तथा 5. नाचिकेतम् 'श्रीकृष्णचरितामृतम्' महाकाव्य 5 सगों में निबद्ध है। इसका उपजीव्य श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध का पूर्वाद्ध है भारत में इस महाकाव्य का महान् आदर हुआ भारत के राष्ट्रपति भी.वी. गिरि ने इस महाकाव्य का अभिनन्दन किया।
नचिकेत महाकाव्य का उपजीव्य कठोपनिषद् में वर्णित नचिकेता–उपाख्यान है। इसमें कुल 28 वर्ग हैं यर्शनिक तत्वों और काव्यों का अद्भुत समन्वय इस महाकाव्य में हुआ है। कवि स्वयं इस काव्य को प्रापरक मानता है–

कृष्णप्रसादरचितं कठोपनिषदात्मकम् ।
ब्रह्मविद्यापरं काव्यं तदिदं पूर्णतामगात्

गौरीगिरोशमहाकाव्य जयदेव के गीत गोविन्द के अनुकरण पर लिखा गया है। इसमें कुल नौ सर्ग हैं। शिरपुराण और कालिदास के कुमारसंभव का स्पष्ट प्रभाग यहाँ परिलक्षित होता है। महाकाव्य के मङ्गलाचरण में कवि ने स्वयं इसके विषयवस्तु का संकेत किया है।

निर्मायैव चराचरात्मकमिदं ब्रह्माण्डमत्यद्भुतम्
तस्मिन् स्वं विनिवेश्य बीजसदृशं स्वेच्छाक्रियाबोधतः ।
सम्प्राप्तं महिमानमात्मरकैर्निर्दिश्य मार्ग स्वतः
क्रीडायां रतयोर्जयन्ति शिवयोः लीलाविहारा इह

महाभारत और श्रीमद्भागवत में वर्णित ययातिचरित के आधार पर घिमिरे जी ने इक्कीस सर्गात्मक ययातिचरित महाकाव्य की रचना की है। यह महाकाव्य अप्रकाशित है।

महाकवि भीमकान्त द्वारा रचित 'जगदम्बिकावैभवम' महाकाव्य श्रीमद्देवीभागवत पर आश्रित है। कुल 12 सर्ग हैं । इनका दूसरा महाकाव्य 'जगदीश्वरवैभवम्' है। इसमें कुल आठ सर्गों में श्रीमद्भागवतमहापुराण को उपजीव्य मान कर ध्रुव की कथा का वर्णन किया गया है।

इनके अतिरिक्त श्रीमाधवभट्टराई का ''सत्साईचरितम्'' महाकाव्य भी प्रकाशित है । इस महाकाव्य में 15 सगों में सॉई बाबा का चरित्र वर्णित है।

महाकवि वेणीमाधवढकाल का 18 सर्गात्मक ''पृथूदयमहाकाव्य'' भी प्रकाशित है जो श्रीमद्भागवत में वर्णित महाराज पृथु की कथा का पल्लवन है। पशुपति झा का नेपाल साम्राज्योदय 15 सर्गों में नेपाल देश का इतिहास प्रस्तुत करता है। नेपाल में रचित कुछ महत्त्वपूर्ण काव्य निम्नलिखित हैं–

खण्डकाव्य

नेपाल के आधुनिक संस्कृत कवियों द्वारा सतत संस्कृत रचना की जा रही है। उनके द्वारा न केवल महाकाव्यों की रचना की गई है अपितु अनेक गद्य, पद्य और नाट्यकाव्यों की रचना भी की गई है। कतिपय समीक्षकों के अनुसार यहाँ गीतिकाव्य, नीतिकाव्य, शतककाव्य, दूतकाव्य तथा समस्यापूर्ति आदि भी लिखे गये हैं। इस विषय में नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के ऋतम्भरा नामक अनुसंधान पत्रिका में कतिपय आलेख प्रकाशित हैं। तदनुसार कतिपय प्रमुख कवियों तथा उनके काव्यों का उल्लेख इस निबन्ध में किया जा रहा है । यद्यपि इन काव्यों के प्रकाशन आदि का सम्यक् उल्लेख वहाँ नहीं हुआ जो आज भी अन्वेषणीय है तथापि इनके उल्लेख से विद्वानों को अनुसंधान की दिशा मिल सकेगी।

संदर्भ सूची

1. श्री महेन्द्रविरहवेदना (शोककाव्यम्) हरिप्रसादशर्मा आचार्यः 2028
2. श्री वीरेन्द्रशुभराज्याभिषेकम् (राजचरितकीर्तनम्) हरिप्रसादशर्मा आचार्यः
3. मिथिलासौरभम् (खण्डकाव्यम्स्) विनतिपुष्पाञ्जलिः (लघुकाव्यसङ्ग्रह)
4. रोहिणीवल्लभशर्मा पोखेलः 2031 2039
5. अभिनवमेघदूतम् (प्रणयकाव्यम्) रोहिणीवल्लभशर्मा पोखेलः 2041
6. रोहिणीवल्लभशर्मा पोखेलः 2047
7. नेपाल (खण्डकाव्यम) टीकारामपन्थी 2040
8. अश्रूपहार (शोककाव्यम्) ऋष्यशृङ्गमुनि (टीकारामपन्थी) 2040
9. मङ्गलग्रहः (खण्डकाव्यम) टीकारामपन्थी 2056
10. श्री महेन्द्रगौरवम् (लघुकाव्यम) तस्या एव कृते (काव्यानुवादः)